SC

[69] SEAT No.________ No. of Printed Pages : 2

SARDAR PATEL UNIVERSITY

M.A. I[st] Semester EXAMINATION

Monday,22 October-2018

10-00 a.m.to1-00 p.m.

PA01CHIN21 : Hindi

(भक्ति काव्य)

पूर्णांक : 70

प्रश्न-1. कबीर के समाज दर्शन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। (17)

अथवा

'गोरा बादल युद्ध खंड' के काव्यसौन्दर्य की चर्चा कीजिए।

प्रश्न-2. 'भ्रमरगीत' के वैशिष्ठ्य को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'कवितावली' के काव्यरूप को स्पष्ट कीजिए। (17)

प्रश्न-3. किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए- (18)

क. तुलसीदास का साहित्य

अथवा

'भ्रमरगीत' काव्य का नामकरण

ख. कबीर की गुरु भक्ति

अथवा

जायसी की काव्य-भाषा

प्रश्न-4 ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए। (18)

क. "लोभ पाप की नदी अँकोरा। सत न रहै हाथ जो बोरा।
जहँ अँकोर तहँ नीक न राजू। ठाकुर केर बिनासै काजू।।
भ जिऊ घिऊ रखवारन्ह केरा। दरब लभ चंडाल न हेरा।।
जाइ साह आगे सिर नावा। ए जगसूर, चाँच चलिआवा।।
जावत है सब नखत तराई। सोरह सें चँडोल सो आई।।

(P.T.O.)

इहाँ उहाँ कर स्वामी, दुऔ जगत मोहिं आस।
पहिले दरस देखावहु, तौ पठवहु कबिलास।।"

अथवा

क . " आँखड़िया झाँई पड़ी, पंथ निहारी निहारि।
जीभड़ियाँ छाला पड़्या, राम पुकारि पुकारि।।
नैना नीझर लाइया, रहट बहै निस जाम।
पपीहा ज्यूँ पिव पिव करौं, कबहु मिलहुगे राम।।
परबति परबति मैं फिरया, नैंन गँवाये रोइ।
सो बूटी पाऊँ नहीं, जातैं जीवनि होइ।।"

ख. "धूत कहौ, अवधूत कहौ, राजपूत कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।
काहू की बेटी सों बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगार न सौऊ।
तुलसी सरनाम गुलाम है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।
माँगि कै खैबो मसीत को सोइबो, लैबे को एक न दैबे को दोऊ।।"

अथवा

ख. "दूर करहु बीना कर धरिबो।
मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।
बीती जाहि पी सोई जानै कठिन है प्रेम-पास को परिबो।।
जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।
सीतल चंद अगिनि सम लागत, कहिए धीर कौन बिधि धरिबो।।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस, बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।"

—X—